दिगम्बर आगम षट्खण्डागम एवं कसायपाहुड में वर्णित मान कषाय का स्वरूप

डॉ. योगेशकुमार जैन

कषाय का सामान्य स्वरूप– आत्मा के अंतरंग कलुष परिणाम को कषाय कहते हैं। यद्यपि क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार ही कषाय लोक में प्रसिद्ध हैं, परन्तु इनके अतिरिक्त कषाय के अनेकानेक नाम आगम एवं दर्शन ग्रन्थों में मिलते हैं। मूल कषायों के अतिरिक्त नौ नो–कषायों का विवेचन आगमों में प्राप्त होता है– हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद ये नो–कषाय कही जाती हैं, क्योंकि ये कषायवत् व्यक्त नहीं होती। इन सबको राग व द्वेष में गर्भित किया जा सकता है। आत्मा के स्वरूप का घात करने के कारण कषाय ही हिंसा है। मिथ्यात्व सबसे बड़ी कषाय है।

कषाय के चार प्रकार कहे गए हैं– अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यानावरण और संज्वलन। कषाय के ये भेद जीव की विषयों के प्रति आसक्ति की अपेक्षा से किये गये हैं। यह आसक्ति भी क्रोधादि कषायों द्वारा ही व्यक्त होती है इसीलिए इन चारों के क्रोधादि के भेद में चार–चार भेद करके कुल 16 भेद किये गये हैं। संभव है कि किसी व्यक्ति में क्रोधादि की मंदता स्पष्ट दिखती हो, परन्तु अंतरंग में विषयों के प्रति आसक्ति की तीव्रता हो। यह भी संभव है कि क्रोधादि की तीव्रता दिखाई दे, परन्तु आसक्तिभाव मंदतम हो। यही कारण है कि क्रोधादि की तीव्रता–मंदता को लेश्या द्वारा निर्दिष्ट किया गया है और आसक्ति की तीव्रता–मंदता को अनन्तानुबन्धी आदि द्वारा।

कषायों की शक्ति अचिन्त्य हैं। कभी–कभी तीव्र कषाय के वशीभूत आत्मा के प्रदेश शरीर से निकलकर अपने शत्रु का घात तक कर आते हैं, इसे ही कषाय समुद्घात कहते हैं।

कषाय का लक्षण–

सुहदुक्खं बहुससं कम्मक्खित्तं कसेइ जीवस्स।
संसारगदी मेरं तेण कसाओ त्ति णं विंति।।[1]

अर्थात् जो क्रोधादिक जीव के सुख–दुःख रूप बहुत प्रकार के धान्य को उत्पन्न करने वाले कर्मरूप खेत का कर्षण करते हैं अर्थात् जोतते हैं और जिनके लिए संसार की चारों गतियाँ मर्यादा या मेढ़ रूप हैं? इसलिए उन्हें कषाय कहते हैं।

सर्वार्थसिद्धिकार लिखते हैं कि–

कषाय इव कषाया:। क उपमार्थ:। यथा कषायो नैयग्रोधादि: श्लेषहेतुस्तथा क्रोधादिरप्यात्मन: कर्मश्लेषहेतुत्वात् कषाय इव कषाय इत्युच्यते।[2]

तात्पर्य यह है कि कषाय अर्थात् क्रोधादि कषाय के समान होने से कषाय कहलाते हैं। उपमा रूप अर्थ को स्पष्ट करते हुये लिखा है कि जिस प्रकार नैग्रोधादि कषाय श्लेष का कारण है उसी प्रकार आत्मा का क्रोधादि रूप कषाय भी कर्मों के श्लेष का कारण है। अत: कषाय के समान यह कषाय है। राजवार्तिककार के अनुसार कषाय आत्मा के स्वाभाविक रूप को कष देती है, उसे प्रगट नहीं होने देती है, उसकी हिंसा करती है अत: क्रोधादि स्वभाव वाली यह कषाय है।[3]

मार्गणा स्थान के अंतर्गत कषाय मार्गणा का स्वरूप एवं भेद–

षट्खंडागम के अनुसार कषाय मार्गणा का स्वरूप इस प्रकार है–

Scanned by CamScanner